बेर

Berry (Plum)

वानस्पतिक नाम: Ziziphus mauritiana

बेर एक फलदार वृक्ष हैं। इसका वृक्ष पूर्ण विकसित

होने पर 10-25 तक ऊंचा होता है।

कच्चे फल हरे रंग के होते हैं। पकने पर थोड़ा लाल या लाल-हरे रंग के हो जाते हैं।

बेर भारत का बहुत ही प्राचीन एंव लोकप्रिय फल है। यह बिटामिन 'सी', 'सी' व 'बी' का अच्छा स्त्रोत है तथा इसमें कैल्शियम, लौह और शर्करा प्रचूर मात्रा में पाए जाते हैं। सस्ता एंव लोकप्रिय फल होने के कारण इसे गरीबों का मेवा भी कहा जाता है। राज्य में मुख्य रूप से उगायी जाने वाली बेरी की किस्मों को फलों के पकने के आधार पर तीन भागों में विभाजित किया गया है:

1. अगेती: गोला, सेब, सन्धूरा, नारनौल

2.कैथली, सनौरी नं0-5, बनारसी कड़ाका, छुहारा

3.पछेती: उमरान, इलायची, काठाफल

पौधे लगाने का समय व दूरी

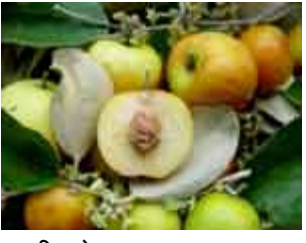

बेरी के प्यौंदी पौधों को लगाने का समय अगस्त-सितम्बर हैं तथा बिना गाची वाले पौधों को 15 जनवरी से फरवरी के प्रथम सप्ताह तक लगाया जा सकता है। जहां पानी की सुविधा हो वहां पौधे से पौधे की दूरी 9x9 मीटर रखनी चाहिये।

खाद व उर्वरक

1. गोबर की खाद जून के अन्त में या जुलाई के पहले सप्ताह में कटाई के बाद डालनी चाहिए।

2.आधी किसान खाद जुलाई में तथा आधी मात्रा नवम्बर में दें।

3.खाद पौधे के मुख्य तने से 3-4 फूट दूर डालनी चाहिए।

4.खाद, मिट्टी की जांच के बाद डालनी चाहिए।

युरिया व जस्ते का छिड़काव

बेर के पौधों पर जुलाई व नवम्बर में 1.5 प्रतिशत यूरिया व 0.5 प्रतिशत जस्ते का छिड़काव करने से न केवल वानस्पतिक वृध्दि होती है बल्कि फल, फूल भी कम गिरते हैं और आन्तरिक गुणों में सुधार होता है।

सिचाई

मूसलाजड़धारी पौधा होने के कारण इसकी जड़े काफी गहराई तक जाती है तथा पौधा स्थापित होने के बाद इसके कम पानीकी जरूरत होती है परन्तु छोटे पौधों को 15 दिन के अन्तर पर सींचना चाहिए। बेर के पौधों को या बागों में साल में चार सिंचाईयों की

जरूरत होती है पहली सिंचाई जून में कटाई के बाद, दूसरी सिंचाई नवम्बर के महीने में फल लग जाने के बाद तथा सिंचाई जून में कटाई के बाद, दूसरी सिंचाई नवम्बर के महीने में फल लग जाने के बाद तथा तीसरी व चौथी सिंचाई जनवरी में। सितम्बर से नवम्बर तक फूल लगता है। इस दौरान सिंचाई नहीं करनी चाहिए।

कटाई-छंटाई

जनवरी के आखिर में 500 मि.ली. मैलाथियान (सायथियान) 50 ई.सी.+किलाग्राम गुड या चीनी को 500लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ छिड़के।

2.लाख बनाने वाला कीट:- लाल रंग के काफी संख्या में छोटे शिशु नरम टहनियों के रस चूसते हैं जिससे पैदावार व गुणवत्ता में भारी कमी आ जाती है। इसका शरीर चिपचिपे पदार्थ सेढका होता है। शिशुओं के त्यागे मल पर फंफूदी लग जाती है। इसका प्रकोप जून-जूलाई (बैसाखी) तक होता है। पुरानी आक्रमणित टहनियों से प्रकोप फैलाने में मदद मिलती है। जिन बागों की भली प्रकार से देख भाल नहीं होती वहां इसका प्रकोप अधिक होता है।

नियन्त्रण एंव सावधानियां

1. फल लेने के बाद, जिन टहनियों पर इस कीड़े का प्रकोप हो उनकी कटाई-छडाई करके जला देना चाहिए।

2. नया फुटाव आने पर 400 मि.ली. मोनोक्रोटोफास (नूवाक्रोन/मोनोसिल) 36 डब्लयू.एस.सी. या 600 मि.ली आक्सीडिमेटान मिथाइल (मिटासिसटाक्स) 25 ई.सी. को 500 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ के हिसाब से अगस्त-सितम्बर में (कातकी) छिड़के।

3. पत्ते खाने वाली भूंडियां:- इन भूडिंयो का प्रकोप शुष्क व अर्ध्द शुष्क क्षेत्रों में बहुत होता है। यद्यपि प्रौढ कीट वृक्षों के पत्तों को खाते हैं परन्तु इनकी सूडियां अनेक फसलों की जड़ों को मानसून या इससे पहले की वर्ष के बाद हानि पहुंचाती है। प्रौढ जोकि तगड़े और भूरे चमकीले होते हैं, जमीन से सांय-काल के समय बाहर आते है। सायं काल से सुबह तक खूब खाते हैं और दिन निकलने से पहले (बहुत सवेरे) ही जमीन में छुप जाते हैं। पत्तों पर गोल छिद्र करके नुकसान पहुंचाते हैं। अधिक प्रकोप की अवस्था में वृक्षों में पत्ते खत्म कर देते हैं व इस तरह के वृक्षों पर फल नहीं लगते।

नियन्त्रण एवं सावधानियां

1. सांयकाल 500 मि.ली मोनाक्रोटाफस (नुवाक्रोन/मोनोसिल) 36 डलब्यू एस.सी. एक लीटर एंडोसल्फान (थायोडान) 35 ई.सी या 1.5 किलोग्राम कार्बोरिल 50 धु.पा. की 500 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ छिडत्रकाव करें। छिड़काव प्रौ

4.दीमक:- यह एक प्रकार का सामाजिक कीट है जो कि फलदार, छाया वाले व अन्य वृक्षें को भारी नुकसान पहुंचाता है या तो जमीन में रहकर वृक्षों की जड़ों को खाकर तने को खोखला करते हुए उपरे की और बढते हैं अथवा पेड़ों की बाहरी सतह पर मिट्टी की सुरंग बनाकर इसके अन्दर रहकर छाल को खाते हैं जिससे वृक्ष सूखकर मर जाते हैं सारा साल इनका प्रकोप बना रहता है। लेकिन सर्दी व बरसात के समय यह प्रकोप कम हो जाता है।

नियन्त्रण एवं सावधानिया

खेत को साफ-सुथरा रखें। कोई भी चीज, जैसे-ठूंठ, गलीसड़ी, सूखी लकड़ी इत्यादि न रहने दें, जो दीमक के प्रकोप को बढ़ावा देती है।

गोबर की हरी व कच्ची खाद प्रयोग में न लाये क्योंकि यह खाद दीमक को बढ़ावा देती है।

5 पाऊडरी मिल्डयू:- इस रोग से फल पर सफेद या पाऊडर लग जाता है।

फलों का आकार छोटा रह जाता है। फलों की सतह खुरदरी हो जाती है। पैदावारी में भारी कमी हो जाती है।

नियन्त्रण व सावधानियां

0.1 प्रतिशत कैराधेन का पहला छिड़काव फूल निकलने से ठीक पहले और दूसरा जब

फल मटर के दाने के बराबर हो करें और पुल: 15 दिन के अन्तराल पर 2 छिड़काव और करें सफल नियंन्त्रण हेतु सभी फलों का फफूंदीनाशी घोल से तर हो जाना अत्यन्त आवश्यक है यदि कैराथेन उपलब्ध न हो तो 0.2 प्रतिशत सल्फैक्स का छिड़काव किया जा सकता है।

6 काजली रोग:- इसमें पतियां पीली होकर जल्दी गिर जाती है। काले रंग का चूर्ण पतियों को निचले भाग पर देखा जा सकता है।

नियन्त्रण व सावधानिया

इसकी रोकथाम के लिए 0.3 प्रतिशत कापर-आक्सीक्लोरोइड के घोल का छिड़काव करें।

7. अल्टरनेरिया झुलसा रोग:- जनवरी-फरवरीमाह में पतियों पर भूरे रंग के धब्बे बनते हैं और बाद में पतियां झुलस जाती है।

नियन्त्रण व सावधानियां

इसकी रोकथाम के लिए मैन्कोजैब डाइथेन एम-45 (इंडोफिल एम-45) के 0.2 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें व दूसरा छिड़काव 15 दिन के अन्तर पर करें।

8.सरकोस्पोरा लीफ स्पॉट:- पत्तों के उपर छोटे-छोटे गोल आकार के धब्बे भी भीतर से भूरे तथा किनारे पर गहरे लाल रंग के होते हैं, बन जाते हैं। रोग के अधिक प्रकोप में पत्तियों सूखकर गिर जाती हैं।

नियन्त्रण व सावधानियां

रोकथाम के लिए मैन्कोजेब नामक दवाई के 0.2 प्रतिशत घोल का छिड़काव रोग के लक्षण दिखाई देते ही 15 दिन के अन्तर पर दो बार करें।

9. कैलैडोस्पोरियम लीफ स्पाट:- पत्ताों पर हल्के -भूरे रंग के छोटे-छोटे अनिश्चित आकार के धब्बे बनते हैं। पत्तियों की निचली सतह पर गहरे-भूरे या काले रंग के धब्बे दिखाई देते हैं।

नियन्त्रण व सावधानियां

सरकोस्पोरा लीफ स्पाट के लिए बनाई गई फफूंदीनाशी से छिड़काव करें।

10. फल गलन:- फल के निचले वाले हिस्से में हल्के भूरे रंग के धब्बे बनते हैं। धब्बों के उपर छोटे-छोटे काले दाने के रूप में दिखाई देते हैं।

नियन्त्रण व सावधानियां

रोकथाम के लिए कापर आक्सीकलोराइड 50 के 0.2 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें।